भगत नामदेव - सबद १८
कउन को कलंकु रहिओ राम नामु लेत ही ॥
रागु टोडी, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ७१८

कउन को कलंकु रहिओ राम नामु लेत ही ॥
पतित पवित भए रामु कहत ही ॥१॥ रहाउ ॥
राम संगि नामदेव जन कउ प्रतगिआ आई ॥
एकादसी ब्रतु रहै काहे कउ तीर्थ जाईं ॥१॥
भनति नामदेउ सुक्रित सुमति भए ॥
गुरमति रामु कहि को को न बैकुंठि गए ॥२॥२॥

सारः जब हम कुछ पल निकालकर अपने भीतर झाँकते हैं तब अक्सर हमें यह एहसास होता है कि हमारे नकारात्मक विचार अस्तित्व के परम सत्य को नहीं दर्शाते, बल्कि, वह उन बंधनों को दिखाते हैं जिन्हें हमने पकड़ रखा है और वह हमारे असली स्वरूप का सच्चा प्रतिबिंब नहीं हैं। यह प्रक्रिया हमारे भीतर एकता की गहन भावना को उजागर करती है, ऐसी एकता जो पूर्ण और अखंड है। हम इस जागरूकता को जितना अधिक पोषित करते हैं, दूसरों के निर्णय या राय से हम उतना ही कम बोझिल महसूस करते हैं। इससे एकत्व की गहन भावना उभरती है, ऐसा व्यक्तित्व जो बाहरी धारणाओं और विचारों से दूर जाकर, हमारा स्वयं से और हमारे आस-पास की दुनिया से सच्चे जुड़ाव स्थापित करता है।

कउन को कलंकु रहिओ राम नामु लेत ही ॥
जब कोई सर्वव्यापी स्रोत के सार पर विचार करता है तब वह किसी भी कलंक को कैसे थामे रख सकता है। यह दर्शाता है कि गहन चिंतन दृष्टिकोण को बदल देता है और एकत्व की भावना को जागृत करता है जो सामाजिक निर्णय से दूर होती है।

पतित पवित भए रामु कहत ही ॥१॥ रहाउ ॥

अज्ञानी केवल सर्वव्यापी एकत्व को महसूस करके ही जागरूक हो जाते हैं। यह शुद्धिकरण बिखराव यानी पतित से एकत्व की पवित्रता की ओर, आंतरिक बदलाव का प्रतीक है जिससे जीवन में सामंजस्य स्थापित होता है। (१)(विराम)

राम संगि नामदेव जन कउ प्रतगिआ आई ॥

सर्वव्यापी एकता से जुड़कर, विनम्र साधक नामदेव कहते हैं कि उन्हें एक अडिग संकल्प प्राप्त हुआ है। यह अस्तित्व के सार के साथ जुड़े रहने की दृढ़ और अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

एकादसी ब्रतु रहै काहे कउ तीर्थ जाईं ॥१॥

जब कोई एकत्व के सच्चे व्रत का पालन करता है तब उसे तीर्थ यात्राएँ करने की क्या आवश्यकता रह जाती है। इससे यह संकेत मिलता है कि एकादशी का व्रत केवल शारीरिक उपवास नहीं बल्कि भीतर की बुराइयों से त्याग का अभ्यास होना चाहिए। (१)

भनति नामदेउ सुक्रित सुमति भए ॥

नामदेव कहते हैं कि अच्छे कर्म करने से समझ में स्पष्टता आती है और मन एकाग्र होता है। यह उजागर करता है कि मानसिक अच्छाई स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होती है, न कि किसी कठोर नैतिक कर्तव्य के रूप में थोपी जाती है।

गुरमति रामु कहि को को न बैकुंठि गए ॥२॥२॥

उस बुद्धि के माध्यम से, जो अज्ञान से जागरूकता की ओर मार्गदर्शन करती है, जो लोग सर्वव्यापी एकत्व की बात करते हैं, यह दुर्लभ जीव भला परम शांति को कैसे प्राप्त नहीं करेंगे। यह 'वैकुंठ' को दर्शाता है, ऐसा मुक्त मन जो शांत, बोझ-मुक्त है और उन लोगों के लिए खुला है जो आंतरिक ज्ञान की खोज में हैं। (२)(२)

तत्त्व: भक्त नामदेव बल देकर कहते हैं कि रीति-रिवाज महज़ मन की बनाई बातें हैं, जो सच्ची समझ अपनाने पर मिट जाती हैं। यह हमें अज्ञान से निकालकर गहरी चेतना की ओर ले जाता है। वह रीतियों पर गंभीरता से सोचने का आह्वान करते हैं। एकादशी का व्रत रखना महज़ एक शारीरिक क्रिया नहीं मानी जानी चाहिए, बल्कि, यह बुराइयों को त्यागने की एक गहरी आंतरिक प्रतिज्ञा होना चाहिए। इसी प्रकार, बैकुंठ की अवधारणा, जिसे अक्सर स्वर्ग माना जाता है, हमें शांत, मुक्त और निर्भार मन विकसित करने की प्रेरणा देती है, ऐसी मानसिकता, जिसे ज्ञान की खोज में समर्पित लोगों ने विकसित किया है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com